जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मई 2026 ।। अंक – 70 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

हुनर से आत्मनिर्भरता तक:
अनुपम दीदी की सफलता की कहानी
(पृष्ठ – 02)

दूर–दूर तक फैली रूप देवी के
अगरबत्ती की महक
(पृष्ठ – 03)

भागलपुर आधुनिक विधि से
मक्के की खेती से
घटाई लागत और बढ़ाई पैदावार
(पृष्ठ – 04)

जीविका: ग्रामीण बिहार में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण एवं समृद्धि की यात्रा

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) बिहार के महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और गाँव को विकास के रास्ते पर अग्रसर करने का प्रमुख माध्यम बन चुका है। वर्ष 2006 में शुरू हुई यह परियोजना आज स्वयं सहायता समूहों के जरिए लाखों महिलाओं को संगठित कर रही है। इन महिलाओं को वित्तीय सहायता, कौशल विकास और जीविकोपार्जन के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाएँ अब परिवार की आय बढ़ाने के साथ–साथ पारिवारिक एवं सामाजिक निर्णय लेने में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

मार्च 2026 तक जीविका द्वारा पूरे बिहार में 11,88,130 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है। इन स्वयं सहायता समूहों में 1,81,60,086 परिवार जुड़ चूके हैं। गाँव स्तर पर 73,515 ग्राम संगठन (वीओ) और क्लस्टर स्तर पर 1,684 संकुल स्तरीय संघ (सीएलएफ) गठित किए गए हैं। इनमें से 930 संकुल स्तरीय संघ (सीएलएफ) को मॉडल सीएलएफ के रूप में विकसित किया गया है। साथ ही 1,498 सीएलएफ को स्वावलंबी साख सहकारी समिति लिमिटेड के रूप में पंजीकृत किया गया है।

वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में जीविका ने उल्लेखनीय प्रगति की है। अब तक 10,77,712 स्वयं सहायता समूहों के बचत खाते खोले गए हैं। वहीं 9,90,522 समूहों को परियोजना द्वारा परिक्रमी निधि (आर.एफ.) और 9,82,462 समूहों को सामुदायिक निवेश निधि (सी.आई.एफ.) प्रदान की गई है। स्वयं सहायता समूहों को बैंक से ऋण उपलब्ध कराया गया है। जीविका स्वयं सहायता समूहों को बैंकों से कुल 66,487 करोड़ रुपये का ऋण उपलब्ध हुआ है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ीं 80,52,047 से अधिक महिलाओं को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत बीमा कराया गया है।

लखपति दीदी पहल जीविका की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मार्च 2026 तक बिहार में 30.21 लाख लखपति दीदी के लक्ष्य की तुलना में 31.71 लाख महिलाओं को लखपति दीदी घोषित किया जा चुका है। ये दीदियाँ जीविकोपार्जन की विभिन्न गतिविधियों को अपनाकर अपनी वार्षिक आय एक लाख रुपये से अधिक कर ली है। वित्तीय वर्ष 2025–26 में पहले छह महीनों में लगभग 20 लाख संभावित लखपति दीदियों का सर्वेक्षण पूरा किया गया। वहीं वित्तीय वर्ष 2026–27 में अतिरिक्त 10 लाख महिलाओं को लखपति बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

कृषि के क्षेत्र में 42,60,892 महिला किसानों को उन्नत विधि से खेती करने हेतु प्रशिक्षित किया गया है एवं उनके द्वारा कृषि गतिविधि की जा रही है। 18,74,290 परिवारों ने पोषण बगीचा विकसित किए हैं। कृषि संबंधी गतिविधियों में संलग्न परिवारों में से 66,559 महिला उत्पादकों को उत्पादक समूहों में शामिल किया गया है। 13,41,632 परिवार पशुपालन गतिविधियों में संलग्न हैं। 8,37,377 परिवार जो बकरी पालन का कार्य कर रहे हैं, इन्हें पशु सखी के माध्यम से सहयोग प्रदान किया जा रहा है। इस प्रकार जीविका के माध्यम से डेयरी, मुर्गी पालन, मछली पालन और बकरी पालन जैसी गतिविधियों से जुड़कर महिलाएं अपने घर की आय बढ़ा रही हैं।

गैर कृषि गतिविधि के तहत 35,109 उद्यमियों को स्वरोजगार एवं उद्यमिता कार्यक्रम के तहत सहायता दी गई है। जानकी स्टिचिंग प्रोड्यूसर कंपनी, मधुग्राम, शिल्पग्राम और जीविका मार्ट जैसे जीविकोपार्जन गतिविधियों से हजारों महिलाओं को रोजगार मिल रहा है और गाँव की अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है।

जीविका निधि की स्थापना एक बड़ा कदम है। 29 मई 2025 को बिहार सहकारी समिति अधिनियम के तहत इसे पंजीकृत किया गया है। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 2 सितंबर 2025 को इसका विधिवत शुभारंभ किया गया था। बिहार सरकार ने जीविका निधि के पूंजीकरण हेतु 1,000 करोड़ रुपये प्रदान किया है। वही सीएलएफ के अंशदान पूंजी से 400 करोड़ रुपये जुटाए जा रहे हैं। जीविका निधि से स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को स्वरोजगार हेतु आसानी से ऋण उपलब्ध हो पाएगी।

सामाजिक विकास के क्षेत्र में भी जीविका सक्रिय भूमिका निभा रही है। 7,321 दिव्यांग स्वयं सहायता समूह गठित किए गए हैं। 325 दीदी अधिकार केंद्र स्थापित किए गए हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत 2,01,218 अत्यंत गरीब परिवारों को शामिल किया गया है, जिनमें से 1,71,318 परिवारों को स्वावलंबी घोषित किया गया है।

जीविका की इस यात्रा ने ग्रामीण बिहार की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है। महिलाओं की बचत बढ़ी है, कर्ज के जाल से मुक्ति मिली है और परिवारों का पोषण स्तर भी सुधरा है। हालांकि इस यात्रा में अभी कई चुनौतियाँ बरकरार हैं, जैसे– बाजार तक आसान पहुँच एवं गुणवत्ता प्रशिक्षण। इनका समाधान करने के लिए समुदाय आधारित संस्थाओं को और मजबूत किया जा रहा है एवं सरकारी योजनाओं से समन्वय किया जा रहा है। आने वाले वर्षों में जीविका आत्मनिर्भर गाँवों का निर्माण करेगी, जहाँ हर महिला आर्थिक रूप से स्वावलंबी होंगी।

हुनर से आत्मनिर्भरता तक: अनुपम दीदी की सफलता की कहानी

नालंदा जिले के नगरनौसा प्रखंड स्थित भदरू गाँव की अनुपम भारती की कहानी ग्रामीण महिला सशक्तीकरण का एक जीवंत उदाहरण है। वर्ष 2019 से पूर्व अनुपम दीदी का जीवन काफी संघर्षपूर्ण था। उनके पति छोटी सी दुकान चलाते थे और इससे होने वाली मामूली आय से परिवार का भरण–पोषण होता था। लेकिन इससे परिवार की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थी। ऐसे में अनुपम भारती अपने बेटे के बेहतर भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहती थीं। उनके पास पेंटिंग का बेहतरीन हुनर तो था, लेकिन उसे आजीविका के साधन में बदलने के लिए न तो कोई उचित मंच था और न ही निवेश के लिए आवश्यक पूँजी।

बदलाव की शुरुआत तब हुई जब वह चांदनी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह की बैठकों और अन्य दीदियों की प्रगति ने उन्हें नया हौसला दिया। अपनी कला को व्यवसाय का रूप देने के लिए उन्होंने समूह से 20,000 रुपये ऋण लिया। इस शुरुआती पूँजी से उन्होंने पेंटिंग का काम शुरू किया। उन्होंने ऋण की राशि से कच्चा माल खरीदा और व्यावसायिक स्तर पर पेंटिंग का कार्य शुरू किया। जीविका के माध्यम से उन्हें न केवल वित्तीय सहायता मिली, बल्कि समुद्र जीविका महिला ग्राम संगठन और मुस्कान जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के माध्यम से उन्हें अपनी कला को प्रदर्शित करने के लिए मंच भी उपलब्ध कराया गया।

आज अनुपम दीदी की पेंटिंग्स की मांग स्थानीय स्तर पर होने के साथ–साथ राज्य स्तरीय सरस मेलों में भी व्यापक रूप से होती है। शादियों और उत्सवों के लिए उनकी बनाई कलाकृतियाँ अब ग्राहकों द्वारा हाथों–हाथ खरीदी जा रही हैं। इस व्यवसाय से होने वाली आय ने उन्हें न केवल आर्थिक तंगी से उबारा है, बल्कि अब वह अब अपने 6 वर्षीय बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाने में भी सक्षम हुई हैं। समूह से लिए ऋण भी नियमित रूप से वापस कर रही है। अनुपम भारती कहती है की यदि हुनर को सही मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता मिले, तो यह जीविकोपार्जन का साधन बन सकती है।

कारोबार से मजबूत किया अपना घर–परिवार

कहते हैं संघर्ष से ही सफलता मिलती है और सफलता से ही जीवन में परिवर्तन आता है। आज के पुरुष प्रधान समाज में, महिलाओं का घर की दहलीज से निकलकर किसी कारोबार को संभालते हुए आगे बढ़ना किसी संघर्ष से कम नहीं होता है। अक्सर ऐसी महिलाओं को समाज के ताने भी सुनने पड़ते हैं। भोजपुर जिले की जीविका दीदियों ने समाज की रूढ़िवादी सोच की परवाह किए बिना, अपने संघर्ष और मेहनत के दम पर एक नई नज़ीर पेश की है। ऐसी ही एक दीदी हैं– सुशीला देवी, जो भोजपुर जिले के बड़हरा प्रखंड अन्तर्गत परिया सिमरिया पंचायत स्थित सिमरिया गाँव की रहने वाली हैं। दीपक जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं सुशीला आज समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। उनकी बदली हुई सोच अन्य महिलाओं के लिए एक सफल व्यवसायी बनने हेतु प्रेरणा बन गई है।

सुशीला देवी के पति ट्रेन के पैंट्री कार में रसोईया का काम करते हैं। केवल उनकी सीमित कमाई से परिवार का भरण–पोषण मुश्किल से चल पा रहा था। आर्थिक स्थिति सुधारने के उद्देश्य से, सुशीला ने मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत प्राप्त 10,000 रुपये की राशि एवं अपना बचत की राशि को मिला कर बड़हरा बाज़ार में साड़ी की एक दुकान खोली। स्थानीय बाज़ार में कपड़ों की अच्छी मांग होने के कारण उनकी दुकान शीघ्र ही चल पड़ी। व्यवसाय में वृद्धि और अच्छी कमाई को देखते हुए सुशीला अब अपनी दुकान में लेडीज़ सूट एवं अन्य कपड़े भी रखने लगी हैं।

सुशीला बताती हैं कि शादी–विवाह और त्योहारों के सीजन में कपड़ों की बिक्री काफी बढ़ जाती है। इस व्यवसाय से उन्हें मासिक आमदनी 10 से 15 हज़ार रुपये तक हो जाती है। वह भविष्य की अपनी योजना साझा करते हुए कहती हैं कि यदि उन्हें मुख्यमंत्री रोजगार योजना से अतिरिक्त आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, तो वह दुकान में रेडीमेड कपड़े भी रखेंगी, जिससे दुकान की बिक्री बढ़ेगी। उनका मानना है कि एक ही स्थान पर कपड़ों की विभिन्न वैरायटी मिलने से ग्राहकों की संख्या में भी वृद्धि होगी।

सामाजिक परंपराओं की सीमाओं को तोड़कर प्रीति बनीं उद्यमी

पश्चिम चंपारण जिले के एक छोटे से गाँव परसौनी की रहने वाली प्रीति देवी ने मैट्रिक तक की पढ़ाई की थी। शिक्षित होने के बावजूद गाँव की रूढ़िवादी परंपराओं और सामाजिक परिस्थितियों के कारण उनके लिए घर की दहलीज लांघकर स्वरोजगार शुरू करना एक बड़ी चुनौती थी। उनके मन में आत्मनिर्भर बनने की प्रबल इच्छा तो थी, लेकिन सही अवसर और सहयोग के अभाव में यह सपना साकार नहीं हो पा रहा था।

प्रीति देवी के जीवन में नया मोड़ तब आया जब उनकी सास, जो स्वयं जीविका समूह की सदस्य हैं, ने उनकी लगन को समझा। सास के सहयोग से प्रीति देवी स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और नियमित बैठकों में भाग लेने लगीं। इसी दौरान जीविका मित्र के माध्यम से उन्हें मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना की जानकारी मिली, जिसके तहत स्वरोजगार के लिए उन्हें 10,000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। योजना के तहत राशि प्राप्त होते ही उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस राशि से प्रीति ने अपना ब्यूटी पार्लर खोलने का फैसला किया। उन्होंने पूरी तत्परता दिखाते हुए मात्र 10 दिनों के भीतर अपने घर पर ही एक छोटा सा ब्यूटी पार्लर शुरू कर दिया। आज उनके पार्लर में समूह की दीदियों के साथ-साथ आस-पड़ोस की महिलाएँ भी मेकअप सबंधी सेवाओं के लिए पहुँच रही हैं। विशेषकर शादी-विवाह के सीजन में उनके ग्राहकों की संख्या बढ़ जाती है, जिससे उनकी आय में निरंतर वृद्धि हो रही है।

प्रीति देवी अब इस व्यवसाय को और विस्तार देना चाहती हैं। उनका सपना है कि भविष्य में और अधिक आर्थिक सहयोग प्राप्त कर वह पार्लर में आधुनिक मेकअप सेवाएँ शुरू करें। प्रीति देवी की यह यात्रा प्रमाणित करती है कि सही मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं के समर्थन से ग्रामीण महिलाएँ भी सफल उद्यमी बनकर समाज के लिए मिसाल पेश कर सकती हैं।

दूर-दूर तक फैली रूपा देवी के अगरबत्ती की महक

जमुई जिले के लक्ष्मीपुर प्रखंड के मोहनपुर ग्राम निवासी रूपा देवी एक साधारण परिवार से आती हैं। इनके पति दिल्ली में मजदूरी करते हैं, जिससे परिवार का भरण-पोषण होता है। रूपा देवी के मन में हमेशा से कुछ करने की चाह थी, ताकि वह परिवार की आर्थिक स्थिति को और बेहतर बना सकें। इसी उद्देश्य से वह करीब 13 वर्षों पूर्व जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह के क्रियाकलापों में उनकी सक्रियता की वजह से उन्हें समूह का सचिव बनाया गया। समूह से जुड़ाव के बाद उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं और सामूहिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी मिली, जिसने उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

रूपा देवी ने लगभग डेढ़ साल पहले अगरबत्ती निर्माण का कार्य शुरू किया। इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए उन्होंने समूह से 20 हजार रुपये का ऋण लिया और अपनी जमा पूँजी भी लगाई। शुरुआत भले ही धीमी रही, लेकिन जल्द ही उनके द्वारा बनाई जा रही अगरबत्ती की महक लक्ष्मीपुर बाज़ार से होते हुए पूरे जमुई जिले में फैलने लगी। उन्होंने बाकायदा लाइसेंस और आकर्षक पैकेजिंग के साथ अपने उत्पाद को बाजार में उतारा। आज उनकी अगरबत्ती व्हाइट रॉक ब्रांड के नाम से मटिया, पारो और जमुई के बाज़ारों में काफी प्रसिद्ध है। उन्होंने समूह और बैंक से ऋण लेकर भी इसमें निवेश किया और अपने उद्यम का विस्तार किया। साथ ही, 26 सितम्बर 2025 को उन्हें मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत 10,000 रुपये की सहायता राशि मिली, जिसे उन्होंने अपने व्यवसाय में लगाया है।

रूपा देवी का घर आज एक छोटी फैक्ट्री का रूप ले चुका है, जहाँ अगरबत्ती बनाने वाली मशीनें लगी हैं। रूपा देवी प्रत्येक माह औसतन 3 से 4 क्विंटल अगरबत्ती तैयार करती हैं। इस कार्य में उनका एक बेटा पूर्ण सहयोग करता है, जबकि दो बेटे अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। इस व्यवसाय से उन्हें प्रतिमाह औसतन 20 हजार रुपये की आमदनी हो रही है, जो पर्व-त्योहारों के समय और बढ़ जाती है। व्यवसाय के साथ-साथ वह अपनी 5 कट्ठा जमीन पर मौसमी फसलें भी उगाती हैं। रूपा देवी अपने उद्यम के विस्तार की योजना बना रही है, जिससे अधिक उत्पादन और ज्यादा कमाई की जा सके ताकि वह और आत्मनिर्भर हो पाएगी।

भागलपुर आधुनिक विधि से मक्के की खेती से घटाई लागत और बढ़ाई पैदावार

भागलपुर जिला के पीरपैंती प्रखंड अंतर्गत राजगंज गाँव की रहने वाली मोम मुर्म मक्का की खेती और पशुपालन कर अपनी आमदनी एक लाख रुपये से ज्यादा कर ली है। ऐसा कर वह अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गई हैं।

दरअसल मोम मुर्म का जीवन पहले रोजमर्रा की मजदूरी और पारंपरिक खेती पर आश्रित था। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति खराब थी और आय का कोई दूसरा साधन नहीं था। खेती पुराने तरीकों से की जाती थी। परिणामस्वरूप, उत्पादन कम होता था और कठिन परिश्रम के बावजूद उन्हें अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता था, जिससे उनका जीवन हमेशा संघर्षपूर्ण बना रहता था।

इन चुनौतियों के बीच, मोम मुर्म ने हार मानने के बजाय बदलाव की दिशा में कदम बढ़ाने का निर्णय लिया। उन्होंने बुद्धनाथ जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर एक नई शुरुआत की। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने नियमित रूप से बचत करना शुरू किया और समूह की बैठकों में सक्रिय भागीदारी निभाई। इन बैठकों के माध्यम से उन्हें वित्तीय प्रबंधन, स्वरोजगार के अवसरों और आधुनिक कृषि के बारे में जानकारी मिली। साथ ही समूह के माध्यम से उन्हें कम ब्याज दर पर ऋण की सुविधा भी मिली, जिसने उनके आत्मनिर्भर बनने के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गंगा जीविका महिला ग्राम संगठन और लकी जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के नेतृत्व में मोम मुर्म ने अपनी खेती को आधुनिक स्वरूप देने की दिशा में ठोस कदम उठाया। ग्राम संसाधन सेवी (वीआरपी) के मार्गदर्शन में उन्होंने पारंपरिक बीजों के स्थान पर उन्नत किस्म के मक्के के बीजों का चयन किया, जिससे उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार हुआ। उन्होंने खेत की जुताई, बुआई और सिंचाई के लिए आधुनिक तकनीकों को अपनाया। इसके अलावा जैविक उर्वरक और वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग करना शुरू किया। कीटों से फसल की सुरक्षा के लिए जैविक विधि से तैयार नीमास्त्र का भी प्रयोग किया। उनके इन प्रयासों का परिणाम अत्यंत सकारात्मक और प्रेरणादायक रहा। इन उपायों से न केवल खेती की लागत में कमी आई बल्कि उत्पादन में वृद्धि हुई है। उनकी उपज की गुणवत्ता बेहतर होने के कारण उन्हें बाजार में अच्छा मूल्य मिलने लगा। मक्के की बिक्री से होने वाली आय से मोम मुर्म की आमदनी बढ़ी।

मोम मुर्म बताती हैं कि एक कट्ठा खेत में लगभग 1.5 से 2 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। खेत की जुताई, सिंचाई, उर्वरक, कीटनाशक के अलावा बुआई, निराई–गुड़ाई और कटाई आदि पर होने वाले श्रम की लागत सहित प्रति कट्ठा मक्का की खेती की कुल लागत तकरीबन ढाई से तीन हजार रुपये तक पहुँच जाती है। दूसरी तरफ, एक कट्ठा खेत में करीब एक से डेढ़ क्विंटल मक्के का उत्पादन हो जाता है। वर्तमान बाजार मूल्य के अनुसार उन्हें इससे तीन से चार हजार रुपये तक की कीमत मिल जाती है। इसके अलावा मक्का का पौधा पशु चारा के रूप में भी उपयोगी होता है। इससे उन्हें पशुपालन में भी मदद मिलती है।

मोम मुर्म इस समय करीब एक बीघा जमीन में मक्का की खेती करती है। वह बताती है कि एक बीघा जमीन में मक्का की खेती करने की कुल लागत करीब 40 से 45 हजार रुपये तक हो जाती है। ऐसे में वह समूह से ऋण लेकर पूँजी की जरूरत पूरी करती है। वहीं मौसम अनुकूल रहने एवं बेहतर फसल होने पर एक बीघा खेत में लगभग 25 से 30 क्विंटल मक्का की पैदावार हो जाती है। स्थानीय स्तर पर अच्छी क्वालिटी का मक्का 2200 से 2500 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बिक जाता है।

वह बताती है कि बाजार में ठीक–ठाक भाव मिलने पर एक बीघा खेत में उपजे मक्के को बेचकर करीब 65 हजार से 70 हजार रुपये तक की आय हो जाती है। वहीं इसमें यदि खेती की लागत घटाई जाए, तो उन्हें प्रति बीघा औसतन 25 से 30 हजार रुपये तक की आय हो जाती है। चूंकि मोम मुर्म के पास कम जमीन है, ऐसे में उनका परिवार मिलकर खेत में श्रम करते हैं, जिससे वे श्रम पर होने वाले वाली लागत को बचा लेते हैं। इससे उनकी आय बढ़ जाती है। मक्का की खेती के अलावा मोम मुर्म सब्जी की भी खेती करती है। इसके अलावा वह गाय एवं बकरी पालन भी करती है। इस प्रकार खेती एवं पशुपालन कार्य अपनाते हुए मोम मुर्म साल भर में तकरीबन एक लाख रुपये से ज्यादा की आय अर्जित कर लेती है। सही योजना, मेहनत और आधुनिक तकनीक के उपयोग से मोम मुर्म ने मक्का की खेती को स्थायी और लाभकारी खेती बनाया है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार